हायर सेकेण्डरी परीक्षा

विषय – अर्थशास्त्र

समय :– 3 घण्टे पूर्णांक – 100

निर्देश :–

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(2) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों मे आंतरिक विकल्प दिये गये हैं।

(3) प्रश्नों के सामने निर्धारित अंक दिये गये है।

Introductions :-

i) All questions are compulsory.

ii) Allotted question are provided with an internal choice except the objective type questions.

iii) Allotted marks are written in front of the question.

प्र.1 एक वाक्य में उत्तर दीजिए – **5**

अ) उस मुद्रा का नाम बताइये जो संकट काल में जारी की जाती है।

ब) अपने देश से वस्तुयें दूसरे देश में बेचना क्या कहलाता है,

स) राजस्व विज्ञान है अथवा कला?

द) वह कर जिसे वही व्यक्ति चुकाता है, जिस पर लगाया जाता है।

5) अपकिरण के श्रेष्ठ माप का नाम बताइये।

Answer in one sentence –

a) Name the money which is issued at the time of crisis?

b) What is the sale of goods from a country to other country called?

c) What is public finance, science or art?

d) A tax, which is paid by that person only on whom it is imposed.

e) State the name of the best measure of dispersion.

प्र.2 निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए – **5**

1) जब किसी बाजार में एक ही उत्पादक होता है, तो उसे.....कहते हैं।

2) पशुपालन, खनन एवं कृषि.....क्षेत्र में शामिल होते हैं।

3) रेल बजट संसद में.....के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

4) जब घरेलू मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा में घटा दिया जाता है तो यह.....
कहलाता है।

5) $\frac{L - S}{L + S}$ = ...

Fill in the blanks of the following –

i) When there is only one seller in the market it is called.....market.

ii) Animal husbandry mining and agriculture are included in.....sector.

iii) The.....presents the Railway Budget in the parliament.

iv) When the value of domestic currency in terms of foreign currency is reduced it is called.....

v) $\frac{L - S}{L + S}$ = ...

प्र.3 निम्नलिखित की सही जोड़ी बनाइये – **5**

स्तम्भ 'अ'		**स्तम्भ 'ब'**
अ) छात्रवृत्ति	–	क) भारत सरकार द्वारा
ब) चालू खाता	–	ख) हस्तांतरित आय
स) भारतीय रुपया	–	ग) सदैव प्रतिकूल होता है
द) भारत का भुगतान संतुलन	–	घ) $\frac{\sqrt{\sum fd^2}}{N}$
इ) प्रमाप विचलन	–	ड.) $fm = \frac{\sum fdm}{N}$
		च) ब्याज व लाभांश

Match the column pairs of the following –

Column 'A'		Column 'B'
i) Scholarship	-	a) Indian government
ii) Current account	-	b) Transfer income
iii) Indian Rupee	-	c) Always adverse
iv) India's Balance of payment	-	d) $\frac{\sqrt{\sum fd^2}}{N}$
v) Standard deviation	-	e) $fm = \frac{\sum fdm}{N}$
		f) Interest and dividend

प्र.4 निम्नलिखित के सत्य/असत्य लिखिये – **5**

1) रिजर्व बैंक सरकार का बैंकर है।

2) बजट में सरकारी ऋणों का उल्लेख होता है।

3) मध्यप्रदेश में लाडली लक्ष्मी योजना वर्ष 2007–2008 में प्रारम्भ की गई है?

4) आधार वर्ष का निर्देशांक सदैव 100 होता है।

5) सह–संबंध गुणांक सदैव एक तथा दो के मध्य होता है।

Write True / False of the following –

i) The Reserve Bank is the banker of the government.

ii) Debts are described in the budget.

iii) The 'Ladali Lakshmi Scheme' has been started year of 2007-08 in Madhya Pradesh.

iv) The Index of base year is always 100.

v) Co-efficient of correlation always remains between 1 and 2.

प्र.5 सही विकल्प चुनिये – **5**

1) एक फर्म, एक उद्योग, एक वस्तु के मूल्य का अध्ययन क्षेत्र है –

अ) समष्टि अर्थशास्त्र ब) व्यष्टि अर्थशास्त्र

स) राष्ट्रीय आय द) समष्टि एवं व्यष्टि

2) मांग वक्र सदैव –

अ) बाये से दायें नीचे की ओर झुकता है

ब) बायें से दायें ऊपर की ओर बढ़ता है।

स) अक्षांश से समानान्तर होता है।

द) समानान्तर होता है।

3) निम्नलिखित में से कौन–सी वस्तु अतिअल्पकालीन बाजार की वस्तु है –

अ) मच्छली ब) साबुन

स) सोना द) मशीन

4) किसी एक वर्ष की राष्ट्रीय आय में उस वर्ष की जनसंख्या से भाग देने पर हमें प्राप्त हो जाती है। –

अ) राष्ट्रीय सम्पत्ति ब) पूँजी

स) बाजार कीमत द) प्रति व्यक्ति आय

5) रोजगार के निर्धारण में प्रभावपूर्ण मॉग का प्रतिपादन करने वाले अर्थशास्त्री है–

अ) प्रो. मार्शल ब) प्रो. डिलार्ड

स) प्रो. कीन्स द) रिकार्डो

Select the correct answer :-

i) The study of a firm an industry price of a commodity is the subject matter of-

a) Macro Economics b) Micro Economics

c) National Income d) Micro and Macro Economics

ii) The demand curve always –

a) Slopes down ward from left to right

b) Rises up ward from left to right

c) Parallel to the bare line

d) Paralleler

iii) Which of the following commodities is the commodity of very short period market -

a) Fish b) Soap

c) Gold d) Machine

iv) By dividing the national income in a year of a country by its population of that year we get –

a) National wealth b) Capital

c) Market Price d) Per capital incomes

v) The economist who propounded the effective demand in the determination of employment is –

a) Prof. Marshall b) Prof. Dillard

c) Prof. Keynes d) Recardo

प्र.6 व्यष्टि अर्थशास्त्र की चार विशेषतायें लिखिये – **4**

Write four Characteristics of micro Economics.

अथवा (Or)

समष्टि अर्थशास्त्र के दो लाभ तथा दो सीमायें लिखिये।

Write two advantages and two limitations of Macro economics.

प्र.7 मॉग का अर्थ लिखिये। आवश्यकता तथा मॉग में अन्तर लिखिये – 4

Write the meaning of Demand, distinguish between demand and want.

अथवा (Or)

पूर्ति के नियम के कोई चार अपवाद लिखिये।

Write any four exceptions of the law of supply.

प्र.8 बाजार मूल्य एवं सामान्य मूल्य में अंतर लिखिये। 4

Distinguish between the market price and normal price.

अथवा (Or)

पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म मूल्य प्राप्तकर्ता होती है सचित्र वर्णन कीजिए।

'In perfect competition a firm accepts price'. Explain with diagram.

प्र.9 जे.बी.से. का बाजार नियम लिखिये। 4

Write the Law of market propounded by J.B.Say?

अथवा (Or)

समग्र मॉग की ब्याख्या चित्र बनाकर लिखिये।

Write the agreegate demand with diagram.

प्र.10 भारत के विदेशी व्यापार की चार विशेषतायें लिखिये। 4

Write the four characteristics of India's foreign trade.

अथवा (Or)

आंतरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में चार समानतायें लिखिये।

Give four similarities between national and international trade.

प्र.11 सार्वजनिक वित्त एवं निजिवित्त में कोई चारअसमानतायें लिखिये। **4**

Write four differences between public finance and private finance.

अथवा (Or)

एडम स्मिथ द्वारा प्रतिपादित चार सिद्धान्तों को लिखिये।

Write any four canons of taration propounded by Adam Smith.

प्र.12 विस्तार के (2) गुण एवं (2) दोष लिखिए। **4**

Write two merits and two demerits of range.

अथवा (Or)

प्रमाप विचलन का अर्थ बताइये इसके तीन गुण लिखिय।

Write the meaning and three merits of standard Deviation.

प्र.13 साधारण तथा भारित निर्देशांक में अन्तर लिखिए। **4**

Distinguish between simple and weighted index numbers?

अथवा (Or)

अपकिरण का अर्थ लिखिये एवं इसकी गणना के दो उद्देश्य लिखिये।

What is meant by Dispersion? Write two objectives of its calculation.

प्र.14 मॉग के नियम के पॉच अपवाद लिखिये। **5**

Write five exceptions of the Law of Demand?

अथवा (Or)

स्थिर लागत का अर्थ बताते हुये स्थिर लागत एवं परिवर्तन शील लागत में अंतर लिखिये।

What is meant by fixed cost. Distinguish between fixed cost and variable cost.

प्र.15 भारत में राष्ट्रीय आय में धीमी गति से वृद्धि के कोई पॉच कारण लिखिये। **5**

Write any five reasons responsible for the slow growth of the national income in India.

अथवा (Or)

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में आने वाली पॉच कठिनाइयों का वर्णन कीजिये।

Describe any five difficulties in calculating national income in India.

प्र.16 परम्परावादी सिद्धांन्त की पॉच विशेषताये लिखिये। **5**

Write five characteristics of classical Theory.

अथवा (Or)

पूर्ण रोजगार का अर्थ लिखिये एवं पूर्ण रोजगार की धारणा के चार महत्व लिखिये।

Write the meaning of full employment and write four points of the importance of the concept of employment.

प्र.17 बजट का महत्व लिखिये। **5**

Write the importance of budget.

अथवा (Or)

घाटे के बजट के प्रभाव लिखिये।

Write the effects of deficit budget.

प्र.18 निर्देशांक निर्माण में रखी जाने वाली पॉच सावधानियों को लिखिये। **5**

Write any five precautions to be taken during the construction of index numbers.

अथवा (Or)

माध्य विचलन किसे कहते हैं? इसके चार गुण लिखिये।

What is mean Deviation? Mention its four merits.

प्र.19 मॉग में विस्तार एवं संकुचन का अर्थ लिखिये एवं रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कीजिये। 6

Write the meaning expansion of demand and contraction in demand. Explain with diagram.

अथवा (Or)

लागत वक्रों की आकृति U क्यों होती है? कोई चार कारण लिखिए।

Why the cost curves are U shaped? Give any four reasons.

प्र.20 व्यापारिक बैंक किसे कहते हैं? इसके पॉच कार्य लिखिए। 6

What is a commercial Bank? Write its five functions.

अथवा (Or)

मुद्रा स्फीति से क्या आशय है व मौद्रिक आय में वृद्धि के पॉच कारण लिखिये।

What is meant by inflation? Write any five causes of increasing monetary income.

प्र.21 निम्न समंकों से श्रेणी अन्तर रीति द्वारा सह–संबंध गुणांक निकालिये – 6

X श्रेणी	53	98	95	81	75	61	59	55
Y श्रेणी	47	25	32	37	30	40	39	45

Find out Co-efficient of correlation of the following data by Rank Difference method :-

X Series	53	98	95	81	75	61	59	55
Y Series	47	25	32	37	30	40	39	45

अथवा (Or)

फिशर के आदर्श निर्देशांक का निर्माण कीजिये –

वस्तु	1990		2000	
	Po	qo	P1	q1
चावल	2	20	5	15
गेहूँ	4	4	8	5
चना	1	10	2	12
ज्वार	5	5	10	6

Calculate fisher's ideal index number from the following data :-

Commodity	**1990**		**2000**	
	Po	qo	P1	q1
Rice	2	20	5	15
Wheat	4	4	8	5
Gram	1	10	2	12
Millet	5	5	10	6

आदर्श उत्तर

उत्तर–1 एक वाक्य में उत्तर दीजिये – **5**

अ. प्रदिष्ट

ब. निर्यात

स. दोनों

द. प्रत्यक्ष कर

इ. प्रमाप विचलन

उत्तर–2 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये – **5**

(1) एकाधिकर

(2) प्राथमिक क्षेत्र

(3) रेलमंत्री

(4) अवमूल्यन

(5) विस्तार गुणांक

उत्तर–3 सही जोड़ी बनाइये – **5**

स्तम्भ 'अ'		**स्तम्भ 'ब'**
अ) छात्रवृत्ति	–	क) पेट्रोल
ब) चालू खाता	–	ख) ब्याज व लाभांश
स) भारतीय रुपया	–	ग) भारत सरकार द्वारा
द) भारत का भुगतान संतुलन	–	घ) सदैव प्रतिकूल
इ) प्रमाप विचलन	–	ड.) $\frac{\sqrt{\sum fd^2}}{N}$

उत्तर–4 सत्य/असत्य लिखिये – **5**

(1) सत्य (2) सत्य (3) सतय

(4) सत्य (5) असत्य

उत्तर–5 सही विकल्प चुनिये :– **5**

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र
2. बायें से दायें सदैव नीचे की ओर झुकता है।
3. मच्छली
4. प्रति व्यक्ति आय
5. प्रो. कीन्स

उत्तर–6 व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषतायें :–

1) **वैयक्तिक इकाइयों का अध्ययन –** व्यष्टि अर्थशास्त्र में वैयक्तिक या विशिष्ट इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। इसका संबंध समूहों से या योगों के अध्ययन से नहीं होता है। **1**

2) **छोट भागों का अध्ययन –** व्यष्टि अर्थशास्त्र में छोटे भागों का अध्ययन किया जाता है इसी दृष्टि से एक उद्योग या बाजार का अध्ययन किया जाता है। **1**

3) **पूर्ण रोजगार की मान्यता –** व्यष्टि अर्थशास्त्रा का अध्ययन करते समय पूर्ण रोजगार की मान्यता को लेकर चला जाता है। **1**

4) **कीमत सिद्धांत –** पूर्ण रोजगार की मान्यता के कारण प्रमुख समस्या साधनों के बटवारे की होती है और यह कीमत के आधार पर किया जाता है, इसलिये कीमत सिद्धांत इसका मुख्य विषय होता है। **1**

अथवा

समष्टि अर्थशास्त्र के लाभ –

1. **व्यापक दृष्टिकोण –** समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था तथा इससे संबंधित बड़े योगों व औसतों का अध्ययन किया जाता है, इसलिये इसे योगात्मक अर्थशास्त्र कहते हैं। **1**
2. **व्यापक विश्लेषण –** समष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत विश्लेषण न होकर व्यापक विश्लेषण होता है, इसीलिये इसमें सरकार के मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों का अध्ययन किया जाता है। **1**

समष्टि अर्थशास्त्र की सीमायें :–

1. व्यक्तिगत इकाइयों के योग के आधार पर समष्टि अर्थशास्त्र के लिये निष्कर्ष निकालने में खतरा – यह आवश्यक नहीं होता है कि व्यक्तिगत इकाईयों के संबंध में जो बात सत्य हो वह संपूर्ण समाज के लिये भी सत्य हो। **1**
2. समूह की बनावट पर ध्यान न देना – वह नीतियॉ जो समूह की बनावट पर ध्यान नहीं देती है वही कभी–कभी भ्रामक परिणाम दे सकती है। अतः समूह के आधार पर कोई भविष्यवाणी करना या नीति बनाना तब तक उचित नही होता, जब तक समूह की बनावट तथा स्वभाव की पूर्ण जानकारी न हो। **1**

उत्तर–7 **माँग का अर्थ –** सामान्य बोलचाल की भाषा में माँग का अर्थ किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा से लगाया जाता है किंतु अर्थशास्त्र में माँग से अभिप्राय वस्तु की उन माताओं से है जो एक निश्चित समय में निश्चित मूल्य में किसी बाजार में उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी जाती है। **2**

<u>माँग तथा आवश्यकता में अंतर :–</u> **2**

माँग तथा आवश्यकता में आर्थिक दृष्टिकोण में अंतर होता है। आवश्यकता प्रभावपूर्ण इच्छा को कहते हैं अर्थात इसमें वस्तु की इच्छा, इच्छा को पूरा करने के साधन तथा साधनों को व्यय करने की तत्परता होनी चाहिये। जबकि मॉग में इन तीनों के अतिरिक्त निश्चित कीमत तथा निश्चित समयावधि का उल्लेख भी होना चाहिये।

अथवा

<u>पूर्ति के नियम के प्रमुख अपवाद निम्नलिखित है :–</u>

(1) भविष्य में कीमत में और अधिक वृद्धि कभी यदि वस्तु की कीमत में वृद्धि हो जाती है, परंतु उत्पादक यह आशा करते है, कि वस्तु की कीमत में अभी और अधिक वृद्धि होगी तो लाभ की आशा से अधिक मात्रा में वस्तु नहीं बचेगे। यदि वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उत्पादक आशा करते है कि भविष्य में कीमतें ओर गिरेगी। तो वे कम कीमत पर अधिक वस्तुये बेचेगे, जिससे उनकी हानि कम हो सके। **1**

(2) कुल दशाओं में यह नियम कृवि उत्पादन वस्तुओं पर लागू नहीं होगा यदि पदार्थों की कीमत बढती है, तो पूर्ति को बढ़ाना सम्भव नहीं होता है। क्योंकि मानसून साथ नहीं देता है। **1**

(3) कलात्मक वस्तुओं के संबंध में पूर्ति का नियम लागू नहीं होता है – क्योंकि यदि किसी दुर्लभ कलाकृति की कीमत अधिक बढ़ गई तो पूर्ति को बढ़ाना या घटाना संभव नहीं। **1**

(4) नीलाम की जाने वस्तु के संबंध में पूर्ति का नियम लागू नहीं होता है – क्योंकि उस वस्तु की कीमत में बहुत अधिक वृद्धि या कमी होने पर भी उसकी पूर्ति बढ़ाना या घटाना संभव नहीं। **1**

उत्तर–8 बाजार मूल्य एवं सामान्य मूल्य में अंतर :– **4**

बाजार मूल्य	**सामान्य मूल्य**
1) बाजार मूल्य अतिअल्पकालीन मूल्य होता है।	1. सामान्य मूल्य दीर्घकालीन मूल्य होता है।
2) बाजार मूल्य मॉग और पूर्ति शक्तियों में अस्थायी संतुलन है।	2. सामान्य मूल्य मॉग व पूर्ति की शक्तियों में स्थायी संतुलन है।
3) बाजार मूल्य निर्धारण में मॉग का सक्रिय प्रभाव होता है।	3. सामान्य मूल्य निर्धारण में पूर्ति का अधिक प्रभाव होता है।
4) बाजार मूल्य किसी समय विशेष में प्रचलित वास्तविक मूल्य होता है।	4. सामान्य मूल्य काल्पनिक होता है, जो व्यवहार में देखने नही मिलता है।

अथवा

''पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म मूल्य प्राप्तकर्ता होती है'' – **3**

पूर्ण प्रतियोगिता मे अनेक फर्में होती हैं जो एकरुप वस्तु का उत्पादन करती है। कुल उत्पादन में एक फर्म का हिस्सा नगण्य होता है। उद्योग में वस्तु का मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है। जहॉ मॉग व पूर्ति आपस में बराबर होती है। उद्योग में वस्तु का जो मूल्य निर्धारित होता है फर्म को स्वीकार करना पड़ता है। फर्म का वस्तु की कीमत पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। वह उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत को गृहण करने वाली होती है।

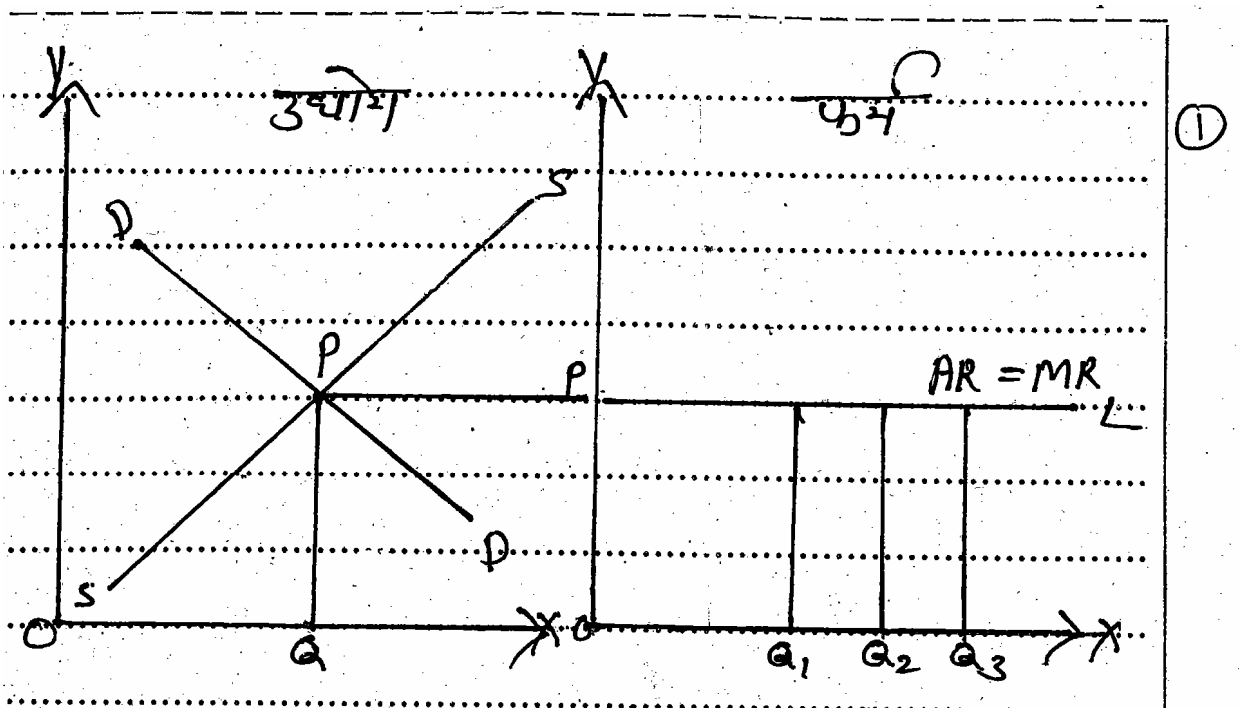

उत्तर–9 **जे.बी.सी. का बाजार नियम :–** **4**

'से' के बाजार नियम' के अनुसार 'उत्पादन ही वस्तुओं के लिये बाजार तैयार करता है। दूसरे शब्दों में 'पूर्ति अपनी मॉग स्वयं उत्पनन करती है।' अर्थ व्यवस्था में जब किसी वस्तु का उत्पादन किया जाता है तो कुछ साधनों को रोजगार मिलता है, तथा उन्हे आय के रुप में मजदूरी, ब्याज व लाभ की प्राप्ति होती है। उत्पादन के ये साधन अपनी आय को इसी वस्तु या अन्य वस्तुओं को खरीदने में प्रयोग करते है। अतः क्रय–शक्ति का सृजन हो जाता है। समस्त उत्पादित माल विक जाता है। यह सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था में साधनों को जो आय प्राप्त होती है, वह सभी उपयोग एवं विनियोग पर व्यय कर दी जाती है। अतः कुल पूर्ति सदैव कुल मॉग के बराबर होती है।

अथवा

<u>समग्र माँग –</u> समग्र माँग मुद्रा की वह कुल राशि है, जिसे अर्थव्यवस्था के सभी उत्पादक रोजगार के किसी स्तर पर नियोजित श्रमिकों के सभी उत्पादित वस्तु को बेचकर प्राप्त करने की आशा करते हैं। दूसरे शब्दों में समग्र माँग 'कुल प्रत्याशित आय प्राप्ति' है जिसे उत्पादक उत्पादित वस्तुओं को बेचने पर प्राप्त करने की आशा करते हैं। समय माँग के विभिन्न स्तरों पर क्योकि उत्पादक की प्रत्याशित आय को दर्शाया है, अतः स्पष्ट है क रोजगार के स्तर से इसका सीधा संबंध होता है। समग्रं माँग को एक वक्र के रुप में दिखाया जाये तो यह ऊपर की ओर उठता हुआ होता है।

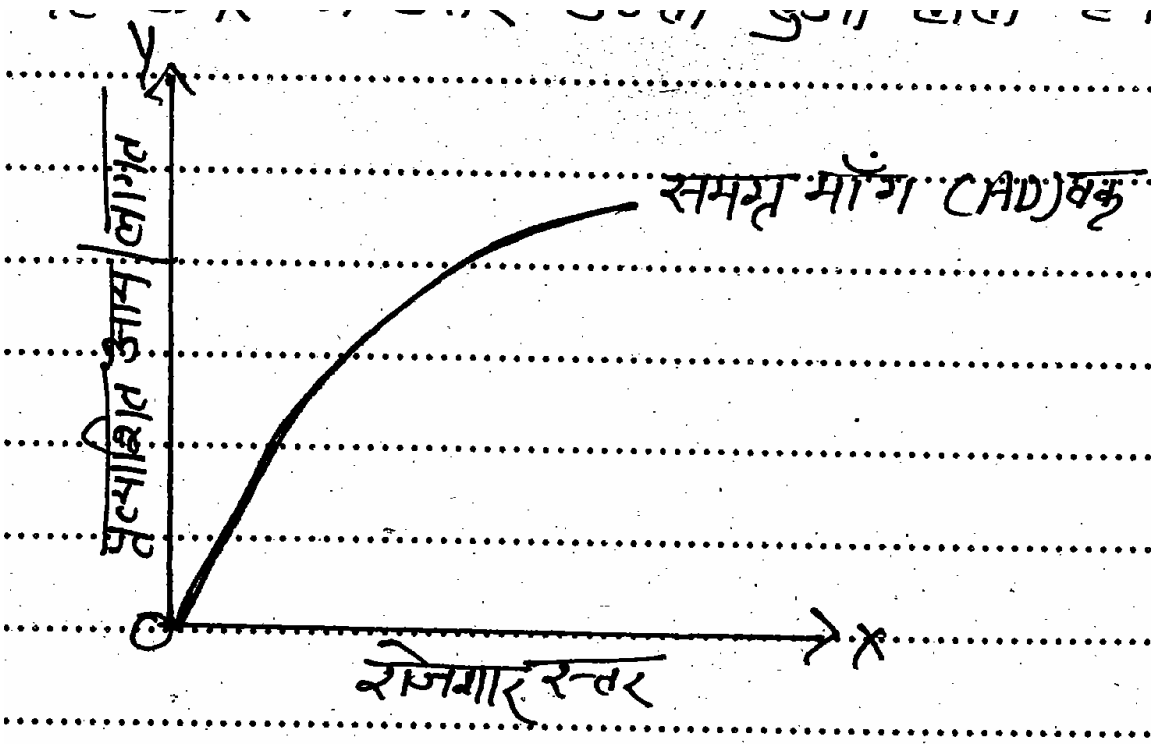

उत्तर–10 भारत के विदेशी व्यापार की निम्नलिखित विशेषतायें हैं – **4**

1. भारत में विदेशी व्यापर का 90% समुद्री मार्ग तथा शेष 10% वायु परिवहन व सड़क परिवहन के द्वारा होता है।

2. भारत का 50% विदेशी व्यापार ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान के साथ होता है।
3. भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार कोलकाता विशाखापटनम्, कोचीन, मुंबई तथा चेन्नई बंदरगाहों से होता है।
4. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने निर्यात के क्षेत्र में बहुत प्रगति की भारत जूट का सामान, चाय मसाले रत्न आभूषण तथा वस्त्रों आदि का भारी मात्रा में निर्यात करता है।

अथवा

आंतरिक व अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की निम्नलिखित समानतायें है :– **4**

1) वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय – आंतरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही व्यापारों में वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय होता है।

2) विशिष्टीकरण और श्रम विभाजन – आंतरिक व्यापार में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की ही भॉति विशिष्टीकरण व्यापार का आधार होता है।

3) व्यापार के लिये दो पक्ष – दोनों ही व्यापारों में दो पक्ष एक क्रेता व दूसरा विक्रेता उपस्थित होते है।

4) सामाजिक संबंध – दोनों ही व्यापारों में सामाजिक रीति–रिवाज और परम्पराओं का आदान–प्रदान होता है।

उत्तर–11 **1. सार्वजनिक वित्त एवं निजीवित्त में असमानतायें–** आय–व्यय समायोजन में अंतर–एक व्यक्ति अपनी आय के अनुसार व्यय करता है, तथा यह प्रयत्न करता है कि अपनी सीमित आय से ही वह विभिन्न आवश्यकताओं की संतुष्टि कर लें। **4**

2. उद्देश्य में अंतर – किसी व्यक्ति की वित्तीय क्रियाओं का प्रमुख उद्देश्य सामान्यतः अपने लाभ में वृद्धि करने का होता है। व्यक्ति केवल उतना ही व्यय करता है, जिससे या तो उसकी अपनी आवश्कताओं की पूर्ति होती है।

3. आय के साधनों में लोच संबंधी अंतर – सरकार के आय के साधनों में लोच होती है। सरकार अपनी आय को नये कर लगाकर, पुराने करों की दरों में वृद्धि

करके आंतरिक तथा बाह्य ऋण प्राप्त करके तथा पक्ष मुद्रा निर्गमित करके बढ़ा सकती है। जबकि निजी वित्त में आय के साधनों में लोच का अभाव होता है।

4. वर्तमान तथा भविष्य के महत्व में अंतर – व्यक्ति का जीवन काल छोटा होता है। अतः व्यक्ति प्रायः वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति पर अधिक ध्यान देता है।

अथवा

करारोपण के सिद्धांत निम्नलिखित हैं :– 4

1) समानता का नियम – एडम स्मिथ के अनुसार प्रत्येक राज्य के नागरिकों को अपनी–अपनी योग्यता के अनुपात में कर देना चाहिये। कर प्रणाली ऐसी होनी चाहिये। जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों को समान त्याग करना पडे।

2) निश्चितता का नियम – इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक नागरिक को जो कर देना है, वह निश्चित होना चाहिये। करदाता को यह स्पष्ट होना चाहिये, कितना, कब, कैसे और किसे कर देना है।

3) सुविधा का नियम – इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कर ऐसे समय तथा ऐसी रीति से वसूल किया जाना चाहिये कि उसको अदा करना करदाता के लिये सबसे अधिक सुविधाजनक हो।

4) मितव्ययता का नियम – एडम स्मिथ के अनुसार राज्य को करों का संग्रह करने मं कम से कम व्यय करना चाहिये। यदि कर संग्रहण में कर द्वारा प्राप्त आय का एक बड़ा भाग व्यय हो जायेगा तो कर की आय का सही उपयोग नही हो पायेगा।

उत्तर–12 **विस्तार के निम्नलिखित गुण हैं :–** 2

1. विस्तार की गणना करना व उसे समझना सरल होता है।
2. विस्तार उन सीमाओं को स्पष्ट कर देता है, जिनके बीच श्रेणी के मूल्य बिखरे होते हैं।

विस्तार के दोष :– 2

1. विस्तार से श्रेणी की बनावट के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

2. विस्तार अपकिरण की एक अस्थिर माप है। श्रेणी के अधिकतम या न्यूनतम मूल्य के परिवर्तन हो जाने पर विस्तार बहुत अधिक प्रभावित होता है।

अथवा

प्रमाप विचलन का अर्थ – **1**

प्रमाप विचलन अंकगणितीय माध्य से समंक श्रेणी के विभिन्न पद मूल्यों के विचलनों के वर्गों के अंकगणितीय माध्य का वर्गमूल्य होता है। प्रमाप विचलन के गुण निम्नलिखित हैं –

1) प्रमाप विचलन शुद्ध गणितीय विधि पर आधारित होता है। अतः इसका प्रयोग अग्रिम गणितीय विवेचन में किया जा सकता है। **3**

2) अपकिरण की अन्य मापों की अपेक्षा प्रभाव विचलन पर निदर्शन के परिवर्तनों का न्यूनतम प्रभाव पड़ता है।

3) प्रमाप विचलन अपकिरण की एक स्पष्ट तथा निश्चित माप है। इसे प्रत्येक स्थिति में ज्ञात किया जा सकता है।

उत्तर–13 साधारण तथा भारित निर्देशांक में अंतर :– **4**

1. सरल निर्देशांक के अंतर्गत वास्तविक मूल्यों के योग के आधार पर निर्देशांक की रचना की जाती है। जब–जब वस्तुओं व सेवाओं को उनके महत्व के अनुसार भार देकर निर्देशांक बनाये जाते हैं तो उन्हें भारित निर्देशांक कहते हैं।
2. इस विधि में सभी वस्तुओं को समान महत्व दिया जाता है। जबकि भारित निर्देशांक में सभी वस्तुओं का अपना महत्व उनके भार के अनुसार दिया गया है।

अथवा

अपकिरण का अर्थ – **2**

अपकिरण पदों के विचलन या अंतर का माप है। संमक श्रेणी के विभिन्न मूल्यों का अंतर अपकिरण है।

अपकिरण के उद्देश्य – 2

1) अपकिरण की माप से श्रेणी की बनावट के बारे में पता चलता है, अर्थात

इस बात की जानकारी प्राप्त की जाती है कि माध्य के दोनों ओर मूल्यों का बिखराव कैसा है।

2) अपकिरण की मापें यह बताती है कि माध्य किस सीमा तक समूह का प्रतिनिधत्व करता है।

उत्तर–14 माँग के नियम के निम्नलिखित अपवाद हैं – **5**

1. गिफिन का विरोधाभास – सर राबर्ट गिफिन ने बताया है कि निम्न कोटी की वस्तु के संबंध में मॉग का नियम लागू नहीं होता है। निम्न कोटी की इन वस्तुओं को गिफिन के नाम पर गिफिन वस्तुयें भी कहते हैं।

2. भविष्य में मूल्य वृद्धि की आशा – भविष्य में मूल्य बढने की यदि उपभोक्ता को अशंका होती है तो वह बढ़ी हुई कीमतों पर भी वस्तु की अधिक मांग करने लगता है जिसके फलस्वरुप यह नियम लागू नहीं होता है।

3. प्रतिष्ठा सूचक वस्तुयें – कुछ वस्तुयें ऐसी होती हैं जिनका प्रयोग करना प्रतिष्ठा सूचक समझा जाता है जबकि उनका आंतरिक मूल्य कुछ नही होता है। ऐसी वस्तुओं पर मॉग का नियम लागू नहीं होता है।

4. अज्ञानता के कारण – अज्ञानतावश वस्तुओं की कीमतें कम होने पर व्यक्ति उनको घटिया समझकर नहीं खरीदते हैं। परन्तु जैसे ही उस वस्तु की कीमत बढती है व्यक्ति उन्हें उपयोगी समझने लगते हैं और उनकी मॉग बढने लगती है।

5. अनिवार्य वस्तुयें – मॉग का नियम बताता है कि कीमत के कम होने पर मॉग बढ़ती है तथा कीमत में वृद्धि होने पर मांग घटती है। जबकि अनिवार्य वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होने पर भी इनकी मॉग में कमी नहीं होती है।

अथवा

स्थिर लागत का अर्थ – ''स्थिर लागतें वे होती हैं जो कि एक फर्म में स्थिर साधनों का प्रयोग में लाने के लिये करनी पड़ती हैं। स्थिर साधनों से आशय उन साधनों से होता है जिनकों अल्पकाल में उत्पादन की मात्रा के साथ परिवर्तन करना सम्भव नहीं होता है जैसे – फर्म की स्थिर पूँजी या मशीन, भूमि, भवन इत्यादि।

स्थिर व परिवर्तनशील लागत में अंतर :– **4**

स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत
1) स्थिर लागतों का संबंध अल्पकाल में उत्पादन के स्थिर साधनों से होता है।	1. परिर्वतनशील लागतों का संबंध अल्पकाल में परिर्वतनशील साधनों से होता है।
2) उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन का स्थिर लागातों पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।	2. उत्पादन की मात्रा परिवर्तन होने पर परिवर्तनशील लागतें भी परिवर्तित हो जाती हैं।
3) अल्पकाल में उत्पादन बन्द हो जाने पर भी स्थिर लागतें बहन करनी पड़ती हैं।	3. अल्पकाल में उत्पादन बंद हो जाने पर परिवर्तनशील लागतें शून्य हो जाती हैं।
4) कुल लागत में से परिवर्तनशील लागतें घटाने पर स्थिर लागतें प्राप्त होती हैं।	4. कुल लागतों में से स्थिर लागते घटाने पर परिवर्तनशील लागतें प्राप्त होती है।

उत्तर–15 भारत में राष्ट्रीय आय में धीमी गति से वृद्धि के कारण :– **5**

1) जनसंख्या में वृद्धि – राष्ट्रीय आय में वृद्धि की धीमीगति का प्रमुख कारण है, जनसंख्या में तीव्र वृद्धि। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर धीमी हो गई है।

2) कृषि पर निर्भरता– देशी की 71% जनसंख्या अभी भी कृषि कार्य में लगी हुई है। जबकि औद्योगिक क्षेत्रों में केवल 12% जनसंख्या लगी है एवं सेवा क्षेत्र में केवल 17% जनसंख्या लगी है। इसलिये राष्ट्रय आय में वृद्धि की गति धीमी है।

3) पूँजी की कमी – पूँजी की कमी का कारण लोगों की बचत करने की इच्छा शक्ति तथा विनियोग की प्रेरणा का व्यय होना है।

4) तकनीकी पिछडापन – उत्पादन में परम्परागत रीतियों से आज भी उत्पादन कार्य किया जा सकता है जिससे उत्पादन कम होता है इसलिये कृषि व उत्पादन दोनों क्षेत्रों में लोगों की आय कम होती है।

5) **आय का असमान वितरण –** भारत में राष्ट्रीय आय का वितरण बहुत असमान है। इस असमानता का प्रमुख कारण सरकार की दोषपूर्ण कर नीति है।

अथवा

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में आने वाली कठिनाइयाँ – **5**

1. **अपर्याप्त एवं अशुद्ध आकड़े –** देश में राष्ट्रीय आय से संबंधित ऑकड़े पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नही होते हैं ऑकडे शुद्ध नही होते हैं।
2. **दोषपूर्ण व्यवसायिक वर्गीकरण –** सही एवं विश्वसनीय ऑकडे उपलब्ध नही हो पाते। क्योंकि देश में एक ही व्यक्ति एक से अधिक व्यवसाय में संलग्न होता है।
3. **दोहरी गणना की समस्या –** दोहरी आय की गणना होने से राष्ट्रीय आय कई गुना बढ़ जाती है।
4. **केंद्रीय विविधता –** भारत में एक क्षेत्र काफी विकसित है दूसरा क्षेत्र पिछडा हुआ है। एक क्षेत्र की राष्ट्रीय आय की गणना के आधार पर सम्पूर्ण देश की राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाना कठिन होता है।
5. **अशिक्षा –** देश के अधिकांश लोग अशिक्षित हैं। अशिक्षा के कार अंधविश्वास का भय है। इसलिये लोग आय व्यय की सूननाएँ नही देते है।

उत्तर–16 परम्परावादी सिद्धांत की विशेषतायें :– **5**

1) मॉग एवं पूर्ति में स्वयं संतुलन – यदि सरकारी अई सरकारी हस्तक्षेप न हो तो मॉग व पूर्ति का स्वयं संतुलन हो जाता है।

2) अति उत्पादन – देश का वार्षिक उत्पादन कितना ही क्यों न हो वह वार्षिक मॉग से अधिक नहीं हो सकता है।

3) बेराजगारी की कल्पना निराधार – बेराजगारी की समस्या नही है चूँकि अति

उत्पादन असंभव है सामान्य बेराजगारी भी असंभव है अर्थव्यवस्था में यदि बेराजगारी है तो वह अल्पकालीन है।

4) हस्तक्षेप रहित आर्थिक समाज – अर्थ व्यवस्था में बाहरी हस्तक्षेप किसी भी दशा में स्वीकार्य नही होता है। यदि सरकारी अर्द्ध सरकारी हस्तक्षेप होता है तो बेराजगारी उत्पन्न होती है।

5) रोजगार दिलाने वाली लागत का स्वयं प्रगट होना – परम्परावादी अर्थशास्त्रीयों की धारणा है जब 'बेकार' पडे साधन काम में लगाये जाते है तो उत्पादन बढ जाता है श्रमिकों की आय प्राप्त होती है। रोजगार में वृद्धि होती है।

अथवा

पूर्ण रोजगार का अर्थ – जिसमें उन सभी व्यक्तियों को जो काम करने की योग्यता रखते हैं काम करना चाहते है। प्रचलित मजदूरी दर पर रोजगार प्राप्त हो जाता है। 1

महत्व :–

1. **बेराजगारी की समाप्ति –** पूर्ण रोजगार की धारणा बेरोजगारी को दूर करने में मदद मिलती है। बेराजगारी अर्थव्यवस्था के लिये बहुत हानिकारक होती है। बेराजगारी की दशा में श्रम शक्ति का हास होता है जो अर्थव्यवस्था के लिये उपयुक्त नहीं होता है।
2. **आर्थिक विकास –** बेराजगारी की दशा में में प्राकृतिक संसाधनों का भी अनुकूलतम उपयोग संभव नहीं हो पाता है। देश के संसाधनों का अनुकूलतम विकास करना संभव हो जाता है।
3. **न्यूनतम आवश्यकताओं की आपूर्ति –** पूर्ण रोजगार की दशा में व्यक्तियों को अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु कोई कार्य आवश्यक उपलब्ध हो जाता है। आज के समय में जीवन निर्वाह के लिये रोजगार होना आवश्यक है।
4. **समाजिक वातावरण –** रोजगार उपलब्ध होने पर देश व समाज में वर्ग संघर्ष चोरी हिंसा आदि में कमी आती है। स्थिरता व शांति का वातावरण बनाने में मदद मिलाती हैं।

उत्तर–17 **1) हिसाब देयता का उद्देश्य :–** यह प्रजातांत्रिक देश में सरकार जनता के प्रति हिंसाबदेयता के लिये उत्तरदायी है जनता के प्रतिनिधियों को इस बात की अधिकार है कि धन का उपयोग किस प्रकार किया जाये। **5**

2) आर्थिक नियंत्रण – बजट के माध्यम से संसद सार्वजनिक कोषो की प्राप्ति और प्रयोग के संबंध में नियंत्रण रखती है तथा उचित नीति की निर्माण करती है।

3) राजकोषीय उपकरण – बजट केवल आय व्यय का विवरण न होकर आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति का उपकरण है। वांछित लक्षणों की प्राप्ति होती है।

4) आर्थिक स्थिरता – बजट का उद्देश्य आर्थिक स्थिरता बनाये रखना है पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की एक विशेषता आर्थिक उच्चवाचन की छाया माना है।

5) प्रशासकीय कुशलता – बजट में प्रत्येक क्षेत्र एवं विभाग की आवश्यकताओं का अनुमान लगाकर उसके अनुसार व्यय करने की स्वीकृति प्रदान की जाती है।

अथवा

घाटे के बजट के प्रभाव :– **5**

1. **कीमत स्तर –** घाटे की वित्त व्यवस्था के कारण वस्तुओं व सेवाओं की मॉग में वृद्धि हो जाती है इससे कीमत स्तर में वृद्धि हो जाती है।
2. **मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि –** घाटे की वित्त व्यवस्था में व्यय में वृद्धि हो जाती है जिससे चलन में मुद्रा की पूर्ति बढ जाती है।
3. **रोजगार में वृद्धि –** घाटे के बजट के कारण सीमान्त प्रकृति बढ जाती है। जिससे मॉग वढ जाती है उत्पादन प्रोत्साहन होता है रोजगार बढ जाता है बेरोजगारों को रोजगार मिलता है।
4. **पूँजी निर्माण –** घाटे के वित्त व्यवस्था से पूँजी निर्माण तीन प्रकार से बढ़ता है –

   1) व्यापारी उत्पादकों की आय बढ़ती है।

2) वस्तुओं की कीमतें बढ़ने पर व्यक्ति इन्हें खरीदने में असहाय महसूस करते हैं। उपभोग कम हो जाता है।

3) अर्थ व्यवस्था में बेकार पडे साधनों का उपयोग होने पर उत्पादन बढ जाता है।

5. **आय का वितरण –** घाटे की वित्त व्यवस्था का आय के वितरण पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। घाटे की वित्त व्यवस्था से कीमत वढ जाती है। उद्योगपति व्यापारियों को लाभ होता है अमीर और अमीर एवं गरीब और गरीब हो जाता है।

उत्तर–18 निर्देशांक निर्माण की सावधानियाँ :– **5**

(1) आधार वर्ष के चुनाव में कठिनाई – निर्देशांक बनाते समय पहली समस्या आधार वर्ष के चुनाव की आती है क्योंकि कोई भी वर्ष सामान्य नही होता है प्रत्येक वर्ष में कुछ न कुछ आसामान्य घटनायें घटती हैं।

(2) प्रतिनिधि वस्तुओं के चुनाव में कठिनाई – निर्देशांकों का निर्माण करते समय एक समस्या आती है किन प्रतिनिधि वस्तुओं को शामिल किया जायें।

(3) वस्तुओं की कीमतों की जानकारी – निर्देशांक बनाते समय वस्तुओं की कीमत फुटकर रखी जायें या थोक रखी जायें। क्योकि विभिन्न स्थानों पर फुटकर मूल्यों में बहुत विभिन्नता पायी जाती हैं।

(4) औसत निकालने में कठिनाई – निर्देशांक के निर्माण में एक समस्या यह आती है कि कौन सी विधि से औसत निकाला जाता है। अतः निर्देशांक बनाते समय कौन सी रीति को अपनाया जाय, इसका निर्णय बडी सावधानी से करना चाहिये।

(5) वस्तुओं का भार में कठिनाई – निर्देशांकों की रचना करते समय वस्तुओं को भार देने में कठिनाइयां एक ही वस्तु अलग–अलग व्यक्तियों एवं वर्गों के लिये महत्व रखती है।

अथवा

माध्य विचलन का अर्थ :–

समंक श्रेणी के किसी सांख्यिकी की माध्य से समग्र श्रेणी के विभिन्न मूल्यों के विचलनों का अंकगणितीय माध्य, माध्य विचलन कहलाता है।

माध्य विचलन के गुण :–

1) माध्य विचलन को समझना व इसकी गणना करना आसान होता है।

2) यह श्रेणी के सभी मूल्यों पर आधारित होती है। श्रेणी की संरचना के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त होती है।

3) माध्य विचलन चरम मूल्यों से अपेक्षाकृत कम प्रभावित होता है।

4) माध्य विचलन की गणना किसी भी माध्य से की जा सकती है।

5) इसका आर्थिक व्यापारिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में व्यापक प्रयोग होता है। आय व धन के वितरण की विषमताओं के अध्ययन में इसकी बहुत उपयोगिता है।

उत्तर–19 **माँग में विस्तार और संकुचन का अर्थ :–**

''अन्य बातों के समान रहने पर'' वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणास्वरुप उसकी मॉगी जाने वाली मात्रा में जो परिवर्तन होता है। उसे मॉगी गई मात्रा में परिवर्तन अर्थात मॉग में विस्तार या संकुचन कहते है।

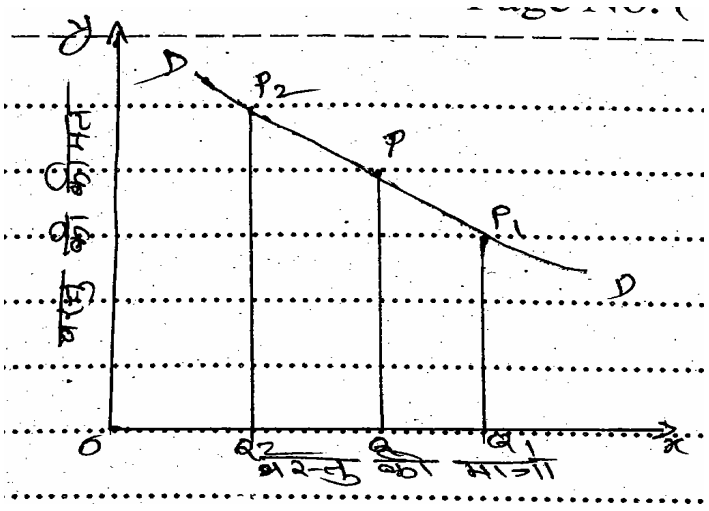

ब्याख्या – Ox अक्ष पर वस्तु की मात्रा तथा Oy अक्ष पर वस्तु की कीमत दर्शाई है। वस्तु जब कीमत PQ है तब मॉगी गई मात्रा OQ है। जब कीमत घटकर P^1Q^1 हो जाते हैं तब मॉगी जाने वाली मात्रा बढ़कर OQ_1 हो जाती है। मॉग का OQ से OQ_1 हो जाना विस्तार है। यदि कीमत बढ़कर P_2Q_2 हो जाती है तो मॉगी जाने वाली मात्रा घटकर OQ_2 हो जाती है। मॉग का OQ से घटकर OQ_2 हो जाना मॉग का संकुचन है। DD मॉग बक्र है।

अथवा

लागत वक्रों की आकृति U आकार के होने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण फर्म को प्राप्त होने वाली आंतरिक बचतें है।

लागत वक्र के U आकार के होने के निम्नलिखित कारण हैं :–

1) श्रम संबंधी बचतें – जब उत्पादन अधिक मात्रा में किया जाता है तो श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण भी उतना ही अधिक बढ़ जाता है। फलस्वरुप श्रमिकों की कार्यकुशलता बढ़ती है जिससे प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जाती है।

2) तकनीकी बचतें – उत्पादन तकनीक में प्राप्त होती हैं उन्हें तकनीकि बचतें कहते हैं। जब उत्पादन अधिक मात्रा में होता है तब प्रति इकाई लागत कम आती है और वक्र आकृति के हो जाते हैं।

3) विपणन की बचतें – जब फर्म उत्पादन की मात्रा को बढ़ाती है तब उस अनुपात में विक्रय लागतें नहीं बढती हैं। जिससे प्रति इकाई लागत कम हो जाती है। इस कारण बक्र U आकार के हो जाते हैं।

4) प्रबंधकीय बचतें – उत्पादन की मात्रा को बढाने पर प्रबंध पर होने वाला व्यय क्रमशः कम हो जाता है अतः लागतक्रम U आकृति के होते हैं।

उत्तर–20 **व्यापरिक बैंक का अर्थ :–** व्यापारिक बैंक का आशय उन बैंकों से होता है जिनकी स्थापना इंण्डियन कम्पनीज एक्ट के अंतर्गत की गई है और जो सभी

साधारण बैंकिग कार्य को संपन्न करते हैं।

कार्य :–

1. जनता से जमा राशियों को प्राप्त करना – जनता से जमाओं के रुप में उनकी बचतों को प्राप्त करना व्यापारिक बैंक का प्रमुख कार्य है। बैंक इन जमाओं पर ब्याज प्रदान करते है। जमा प्राप्ति के लिए विभिन्न खाते होते हैं।

2. ऋण प्रदान करना – बैंक जिसकी राशि जमा के रुप में प्राप्त करते हैं उसका एक निश्चित भाग अपने पाप नगद रुप में रखकर शेष राशि जरुरतमंद लोगों को ऋण के रुप में दे देते हैं। ये ऋण विभिन्न जमानतें के आधार पर दिये जाते हैं।

3. अभिकर्ता संबंधी कार्य – बैंक अपने ग्राहकों के अभिकर्ता या एजेंसी संबंधी कार्य संपन्न करता है। इन कार्यों को बैंक निःशुल्क अथवा कमीशन लेकर करता है। अभिकर्ता संबंधी कार्य निम्नलिखित है–

अ) ग्राहको का अन्य बैंक से रुपया वसूलकर उसके खाते में जमा करना।

ब) बीमा किश्त, ब्याज राशि, ऋण एवं कर की राशि का भुगतान करना।

स) अंश तथा प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रया करना।

द) ग्राहकों की सम्पत्ति के व्यवस्थापक के रुप में कार्य करना।

4. विदेशी मुद्रा का क्रय–विक्रय – भारतवर्ष में यह कार्य विदेशी विनियम बैंक द्वारा किया जाता है किंतु वर्तमान में कुछ व्यापारिक बैंक भी इस कार्य को करने लगे हैं। किंतु इस काय्र के लिए इन्हें रिजर्व बैंक की अनुमति लेना आवश्यक है।

5. आन्तरिक तथा विदेशी व्यापार का अर्थ प्रबंधन – बैंक इस कार्य को हुण्डियों व विदेशी विनिमय बिल को भुनाकर करता है। यदि किसी व्यक्ति के पास ऐसा विदेशी विनिमय बिल है जो कुछ समय बाद परिपक्व होना है और उसे धन की तुरंत आवश्यकता है तो ये बैंक बट्टा काटकर उसे तुरंत धन उपलब्ध करा देता है।

अथवा

मुद्रा स्फीति से आशय – 'क्रउथर के अनुसार 'मुद्रा स्फिति वह अवस्था है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिरता है तथा वस्तुओं की कीमतें बढती हैं।''

मौद्रिक आय में वृद्धि करनेवाले कारक –

1. **सरकार की मुद्रा तथा साख नीति –** जब सरकार प्राकृतिक आपदा एवं युद्ध आदि के समय केन्द्रीय बैंक के माध्यम से अतिरिक्त मुद्रा का निर्गमन करती है तो मुद्रा प्रसार की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी प्रकार जब केन्द्रीय बैंक ऐसी साखा नीति अपनाता है जिससे ऋण सुविधाओं में वृद्धि हो जाती है जो मुद्रा की पूर्ति बढ जाने से मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
2. **घाटे की वित्त व्यवस्था –** जब सकरकार घाटे का बजट बनाती है तो इसकी पूर्ति नई मुद्रा के सृजन से करती है। इससे मुद्रा की पूर्ति बढ जाने से मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
3. **मुद्रा के प्रचलन वेग में वृद्धि –** जब व्यक्तियों की उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि हो जाती है जब मुद्रा का प्रचलन बेग बढ जाता है। इससे मुद्रा की पूर्ति बढ जाती है और मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
4. **व्यापारिक बैकों की साख नीति –** जब व्यापारिक बैंक साख का सृजन करते हैं तो इससे मुद्रा की मात्रा बढने से मुद्रा स्फीति का जन्म होता है।
5. **अनुत्पादक व्यय में वृद्धि –** जब सरकार अनुत्पादक कार्यों पर व्यय करती है तो मुद्रा की मात्रा तो बढती है किन्तु वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि न होने से मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है।

उत्तर–21

X श्रेणी		श्रेणी Y			
X	श्रेणी x	Y	श्रेणी y	श्रेणी अंतर D	श्रेणी अंतरों के वर्ग D^2
53	8	47	1	−7	49
98	1	25	8	+7	49
95	2	32	6	+4	16
81	3	37	5	+2	4
75	4	30	7	+3	9
61	5	40	3	−2	4
59	6	39	4	−2	4
55	7	45	2	−5	25
n=8				$\Sigma D = 0$	$\Sigma D^2 = 160$

③

$$r = 1 - \frac{6\Sigma D^2}{n(n^2-1)} \quad ①$$

$$= 1 - \frac{6 \times 160}{8(8^2-1)} =$$

$$= 1 - \frac{960}{504}$$

$$= \frac{504 - 960}{504} = -.90 \quad ②$$

अतः x तथा y के मध्य में अत्यधिक मात्रा में ऋणात्मक संबंध है।

अथवा

वस्तु	1990		2000					
	P_0	q_0	P_1	q_1	P_0q_0	P_1q_0	P_0q_1	P_1q_1
चावल	2	20	5	15	40	100	30	75
गेहूँ	4	4	8	5	16	32	20	40
चना	1	10	2	12	10	20	12	24
जवार	5	5	10	6	25	50	30	60
					$\Sigma P_0q_0 = 91$	$\Sigma P_1q_0 = 202$	$\Sigma P_0q_1 = 92$	$\Sigma P_1q_1 = 199$

(3)

$$P_{01} = \sqrt{\frac{\Sigma P_1 q_0}{\Sigma P_0 q_0} \times \frac{\Sigma P_1 q_1}{\Sigma P_0 q_1}} \times 100$$ (1)

$$= \sqrt{\frac{202}{91} \times \frac{199}{92}} \times 100$$

$$= \sqrt{\frac{40198}{8372}} \times 100$$

$$= \sqrt{4.8015} \times 100$$

$$= 2.1912 \times 100$$

$$= 219.12$$ (2)